ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-2*March- 2018
Innovation The Research Concept

शरणार्थियों की समस्या एवं विश्व समुदाय की भूमिका : विशेष संदर्भ सीरियाई शरणार्थियों के संदर्भ में

अनुराधा त्रिपाठी
व्याख्याता,
राजनीति विज्ञान विभाग,
स.पृ.चौ. राज. महाविद्यालय,
अजमेर

सारांश

अवांछनीय परिस्थितियों में व्यक्तियों व व्यक्ति समूहों के द्वारा अपने मुल्क को छोड़कर दूसरे मुल्क में या दूसरी जगह पर शरण लेने की परम्परा मानव इतिहास में हमेशा से रही है। कोई भी राष्ट्र चाहे वह बड़े भू–भाग वाला हो या छोटे भू–भाग वाला वह अपने देश की सामाजिक, राजनैतिक परिस्थितियों, आर्थिक स्थिति और अन्य तत्त्वों को ध्यान में रख कर शरण देता रहा है। सम्बन्धित पत्र में जो विषय उठाया गया है – सीरियाई शरणार्थियों को शरण देने के संदर्भ में यूरोपीय राष्ट्रों द्वारा जो आधार बनाया गया और बनाया जा रहा है उसको लेकर यूरोपीय राष्ट्र क्यों और किस आधार पर विभाजित है उससे सम्बन्धित है क्योंकि उपर्युक्त घटना नृवंशीयता के आधार पर और आतंकवाद से पीड़ित होने की वजह से घट रही है और आज पूरा विश्व आतंकवाद से भयाक्रान्त है। इस मद्देनज़र यूरोपीय राष्ट्र शरणागत के मुद्दे का किस प्रकार सामना एवं समाधान कर रहे हैं – सम्बन्धित पत्र उसके अवलोकन का एक प्रयास है।

मुख्य शब्द : नागरिकता, अधिसंख्य, शरणार्थी, राज्यविहीनता।

प्रस्तावना

समाज में किसी भी व्यक्ति की पहचान उसकी नागरिकता से होती है जिसमें यह जाना जाता है कि व्यक्ति अमुक मुल्क का है। यही नागरिकता एक तरफ तो व्यक्ति को उसको सभी प्रकार की सुरक्षा प्रदान करती है दूसरी तरफ उसे इस बात का भी अभास कराती है कि वह किसी एक राष्ट्र विशेष से जुड़ा है।

नागरिकता ही व्यक्ति विशेष को राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ–साथ व्यक्ति को अनेक नागरिक व राजनीतिक अधिकार प्राप्त करने हेतु न्यायिक आधार प्रदान करती है। इसी नागरिकता के कारण व्यक्ति स्वतः उस राष्ट्र विशेष के सभी अधिकारों का हकदार हो जाता है। यह नागरिकता हमें हमारे जन्म के साथ ही स्वतः स्फूर्त मिल जाती है और हम गर्व से कहते हैं कि हम इस राष्ट्र के नागरिक हैं।[1]

लेकिन इसी तस्वीर का एक दूसरा पहलू भी है जिससे अधिसंख्य अनजान हैं और इसी में उनका दर्द छिपा है और वह दर्द है– राज्यविहीनता के कारण इनको कोई पहचान नहीं है। दुर्भाग्य से व्यक्तियों को कभी–कभी जाने–अनजाने राजनैतिक व अराजनैतिक कारणों जिसमें साम्प्रदायिक हिंसा, आतंकी हिंसा, दंगे, गृह युद्ध, आर्थिक शोषण, गरीबी, रोजगार का अभाव, विदेशी आधिपत्य इत्यादि की वजह से अपना मूल देश, राष्ट्र को छोड़कर दूसरे राष्ट्रों में आश्रय व शरण लेना पड़ता है।

अध्ययन का उद्देश्य

उपरोक्त संदर्भित लेख का उद्देश्य यह देखना है कि शरणार्थी समस्या के उत्पन्न होने पर राष्ट्रों के द्वारा किस प्रकार व्यवहार किया जाता है, किस आधार पर शरण देने का निर्णय लिया जाता है। क्या राष्ट्र इस मुद्दे पर उदारता के साथ शरण देने का निर्णय लेते है या फिर समस्त उदारता के बावजूद अपने राष्ट्र को प्रभावित करने वाले आर्थिक, सामाजिक, नस्लीय एवं नृवंशीय तत्त्वों को ध्यान में रखकर शरण देने एवं शरण देने के मापदण्डों को निर्धारित करते हैं।

शरणार्थियों का अर्थ

सामान्य सोच के अनुसार शरणार्थी वे व्यक्ति होते हैं जो साधारण तम्बू में रहते हैं, जहाँ आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय सहायता संघ पर निर्भर रहना पड़ता है। शरणार्थी प्रस्थिति अभिसमय के अनुसार शरणार्थी की परिभाषा "शरणार्थी वे हैं जो मूल वंश, धर्म, राष्ट्रीयता के कारण उत्पीड़न के

सुस्थापित या राजनैतिक अभिमत का सदस्य अपनी राष्ट्रीयता के देश के बाहर है व असमर्थ या भय के कारण उस देश में संरक्षण नहीं लेना चाहते हैं या जो राष्ट्रीयता न होने के कारण अपने पूर्व स्थायी निवास के देश से बाहर हैं, असमर्थ हैं या ऐसे किसी भय के कारण उस देश में जाने हेतु अनिच्छुक हैं।" सारांशतः जो व्यक्ति अपनी राष्ट्रीयता के देश से वंचित हैं या उनकी कोई राष्ट्रीयता नहीं है व मूल वंश, धर्म, राष्ट्रीयता, विशिष्ट सामाजिक समूह की सदस्यता के कारण उत्पीड़न का भय है, शरणार्थी कहलाते हैं।

परिभाषा

28 जुलाई 1951 के शरणार्थी के प्रस्थिति से सम्बन्धित अभिसमय के अनुसार शरणार्थी वह व्यक्ति हैं, जो अपने देश एवं अपना स्थाई निवास को उत्पीड़न या सैन्य कार्यवाई से बचने के लिए छोड़ देते हैं। अर्थात् 1 जनवरी 1951 के पूर्व होने वाली घटनाओं के परिणामस्वरूप और मूलवंश, धर्म, राष्ट्रीयता के कारण उत्पीड़न के सुस्थापित या राजनीतिक अभिमत का सदस्य अपनी राष्ट्रीयता के देश के बाहर है और असमर्थ या ऐसे भय के कारण उस देश का संरक्षण लेने में अनिच्छुक हैं या जो राष्ट्रीयता ने होने के कारण और ऐसी घटनाओं के परिणामस्वरूप अपने पूर्व स्थाई निवास के देश से बाहर है, असमर्थ है, या ऐसे भय के कारण कि उस देश में वापस जाने के लिए अनिच्छुक हैं।

Convention on Status of Refugees – 1951 के अनुसार जो अपनी राष्ट्रीयता के देश से वंचित है या उनकी कोई राष्ट्रीयता नहीं है, मूल वंश, धर्म, राष्ट्रीयता, विशिष्ट सामाजिक समूह की सदस्यता के कारण, विशिष्ट राजनीतिक विचारधारा के कारण उत्पीड़न का भय है, जो इन कारणों से अपने मूल राष्ट्रों को लौटना भी नहीं चाहते वो शरणार्थी कहलाते है।[2]

शरणार्थी लगभग सम्पूर्ण विश्व में ही किसी–न–किसी रूप में पाए जाते हैं। अधिकांशतः शरणार्थियों की संख्या उनके देश की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा के पास ही पाई जाती है। जब स्थितियां बहुत ज्यादा खराब हो जाती हैं तब ये विश्व में जहां भी शरण मिल सकें वहां शरण लेने की कोशिश करते है। एक मोटे अनुमान के अनुसार इस समय 2 करोड़ लोग बतौर शरणार्थी विभिन्न देशों में रह रहे हैं और 1 करोड़ लोग दुनिया भर में स्टेटलैस (राज्य विहिन) हैं।[3]

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सीरियाई शरणार्थियों की संख्या सबसे बड़ी है।[3] एक अनुमान के अनुसार 76 लाख सीरियाई नागरिक गृह युद्ध के कारण अब तक विस्थापित हुए हैं, जिसमें तुर्की में 19 लाख, लेबनान में 11 लाख व जॉर्डन में 6 लाख सीरियाई भी शरणार्थी शिविरों में रह रहे हैं और अर्न्तराष्ट्रीय संस्थाओं के पास इतना पर्याप्त फण्ड नहीं है कि वो सभी को रोटी, कपड़ा, आवास दे सके।[4]

वर्तमान समय में जिस शरणार्थी समस्या ने पूरे विश्व का ध्यान खींचा है वह है– सीरियाई शारणार्थियों की समस्या ने। सीरिया में लगातार चल रहे गृह युद्ध और ISIS के बढ़ते प्रकोप के कारण शरणार्थियों की समस्या लगातार त्रासद होती जा रही है।

विश्व समुदाय की भूमिका

2 सितम्बर 2015 के अखबारों का वह दृश्य जब एक 3 साल का सीरियाई शरणार्थी अयलान कुर्दी का शव भूमध्य सागर के किनारे पड़ा मिला और इस दृश्य ने सीरिया में चल रहे संकट की तरफ पूरी दुनिया का ध्यान खींचा।

जिसका असर यह हुआ कि कई यूरोपीय देशों ने इन सीरियाई शरणार्थियों को शरण देने के लिए अपनी सीमाएं खोल दी।

ऐसा नहीं है कि इन सीरियाई शरणार्थियों ने अपने पड़ौसी मुल्कों में शरण नहीं ली। ली है – इन शरणार्थियों ने कई पड़ौसी देशों जैसे– लेबनान, तुर्की, मिश्र, जॉर्डन और ईराक में शरण ली है।

लेकिन कुछ पड़ौसी राज्यों ने भी इन शरणार्थियों को पनाह नहीं दी जैसे– सऊदी अरब, यूनाइटेड अरब अमीरात, कतर, कुवैत।

1. प्रथम वजह है – इन देशों को अन्दरूनी राजनीति। यहाँ जो शासक वर्ग जैसे शिया अथवा सुन्नी सत्ता में है वह इन शरणार्थियों को अपने यहां पर शरण नहीं देना चाहता।[5]
2. इनको शरण ना देने के पीछे एक दूसरी वजह है कि इन देशों ने अन्तर्राष्ट्रीय शरणार्थी कन्वेशन पर समझौता नहीं किया है इसलिए ये देश इस बात के लिए बाध्य नहीं हैं कि वे शरणार्थियों को लें। ऐसी स्थिति में इन शरणार्थियों के पास अन्यत्र जाने के लिए ऐसे देशों की संख्या अधिक नहीं है। और जिन पड़ौसी अरब मुल्कों ने इन शरणार्थियों को पनाह दी उनकी भी एक सीमा है।

परिणाम यह हुआ कि अब ये सीरियाई शरणार्थी जल व थल के रास्ते से टर्की से होते हुए ग्रीस और यूगोस्लाविया के रास्ते से यूरोपीय देशों में पहुँच रहे हैं और एक मोटे अनुमान के अनुसार अब तक 2 लाख सीरियाई शरणार्थी समुद्र अथवा सड़क मार्ग से यूरोप पहुँच गए है।

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-2*March- 2018
Innovation The Research Concept

स्पॉट लाइट

यूरोप में सीरियाई शरणार्थी: पहले बसने का खुला आमंत्रण देकर अब जर्मनी भी पीछे हटा

...आखिर जाएं तो जाएं कहां!

तीन साल के सीरियाई शरणार्थी बालक आयलान कुर्दी की समुद्र तट पर लाश ने करोड़ों लोगों के दिलों को झकझोरा। गृहयुद्ध के कारण बड़ी संख्या में सीरियाई देश छोड़ कर यूरोप में भविष्य को तलाश रहे हैं। छोटी नौकाएं और उफनता सागर उनकी परीक्षा ले रहा है। जर्मनी ने द्वार खोलकर उनके स्वागत का ऐलान किया। शरणार्थियों में नई उमंग जागी, लेकिन अब बड़ी संख्या के कारण जर्मनी ने अपने बॉर्डर को शरणार्थियों के लिए बंद कर दिया है। लाखों की आशाओं पर पानी फिर गया। जाएं तो जाएं कहां। अपने देश में जान खतरे में, पड़ोसी देशों में स्थिति गंभीर और अब यूरोप के रास्ते भी बंद। चौराहे पर सीरियाई शरणार्थियों की दास्तां पर

यूरोप में पनाह पाने को यूं बढ़ रहे शरणार्थियों के कदम

यूरोपीय राष्ट्रों का विभाजित दृष्टिकोण

शरणार्थियों को पनाह देने के मुद्दे पर पूरा यूरोप बंटा हुआ है। दक्षिण और दक्षिण पूर्व के यूरोपीय देश इन शरणार्थियों को पूरे यूरोप में आने देने का विरोध कर रहे हैं। जबकि जर्मनी आदि देशों का कहना है कि हमें इन शरणार्थियों की मदद करनी चाहिए। जो यूरोपीय देश इन सीरियाई शरणार्थियों का यूरोप में आने देने का विरोध कर रहे है – उनका तर्क है इस बार की शरणार्थी समस्या अलग है क्योंकि यह आतंकवाद के साये में घटित हो रही है और शरणार्थी एक अलग सांस्कृतिक धार्मिक समुदाय के लोग हैं।

दूसरे जो यूरोपीय देश सीरियाई शरणार्थियों के प्रति इतना स्वागतपूर्ण रवैया नहीं रखते हैं इसके पीछे इन देशों की अपनी आन्तरिक राजनीति और आर्थिक समस्यायें हैं[6]– जैसे पुर्तगाल, स्पेन, यूनान की आर्थिक तो ब्रिटेन, फ्रांस, हंगरी, रोमानिया, सर्बिया और मेसीडोनिया की अपनी राजनीतिक समस्यायें हैं जो शरणार्थियों के हितों से टकराती हैं। इस वजह से सीरियाई शरणार्थियों के प्रति इनका सकारात्मक रवैया नहीं अपनाया है। जब कि जर्मनी जैसे देशों का यह मानना है कि हमें इन शरणार्थियों की सहायता करनी चाहिए क्योंकि यह वक्त समझौतों का नहीं सहानुभूति का है इसलिए जर्मनी के द्वारा यह घोषणा की गई की वह इन शरणार्थियों को सीधे आने देगा।

जर्मनी के द्वारा शरण देने की इस उदारता के पीछे जर्मनी के इतिहास के साथ–साथ वर्तमान आर्थिक परिदृश्य भी है।[7] आज के वैश्विक दौर में उसे कुशल कामगारों की जरूरत है जो इन सीरियाई शरणार्थियों से कुछ हद तक पूरी हो सकती है। इसके अलावा भी उसे ऐसे कामगार मिल सकते हैं जिनकी शिक्षा पर जर्मनी ने कोई खर्च नहीं किया है।

इसके अलावा यूरोपीय देश यह भी मानकर चलते हैं कि आज सीरिया में चल रहे गृह युद्ध के पीछे एक कारण स्वयं यूरोप भी है। यूरोपीय देशों और नाटो की सेनायें मध्यपूर्व के "शांति मिशनों" में शामिल रही है।

लेकिन जब बड़ी संख्या में शरणार्थी जर्मनी में आने लगे तो जर्मनी में भी चिन्ता होने लगी। अंततः जर्मनी ने भी देश की सीमाएं इन शरणार्थियों के लिए बन्द कर दी।

परिणाम यह हुआ कि अब ये सीरियाई शरणार्थी कहां जाए अपने देश में जान खतरे में हैं, पड़ौसी देशों में स्थिति गम्भीर है और अब यूरोप के रास्ते भी बन्द होने जा रहे है।

इसी वजह से पूरे यूरोप में ऊहापोह की स्थिति है कि कैस समस्या का समाधान हो?

समाधान

ऐसे में एकदम से तो सीरियाई शरणार्थियों की समस्या का समाधान सम्भव नहीं है यह शरणार्थियों की समस्या रहने वाली है। यूरोपीय देशों को अब इस समस्या का तर्कसंगत हल खोजने की जरूरत है इसके लिए जो विभिन्न प्रयास व विकल्प किए जा रहे हैं वो क्रमिक रूप में इस प्रकार से हैं –

1. यूरोपीय देशों के द्वारा डबलिन समझौते के तहत शेनजेन वीजा दिये जाने का प्रयास किया जा रहा है जिससे की समस्या का एकबारगी तो तात्कालिक समाधान हो।[8] यूरोप के 26 देशों ने एक समझौता किया है जिसके अन्तर्गत कोई भी व्यक्ति इनमें से

किसी एक देश में आता है तो वह शेनजेन वीजा बनवाकर निर्बाध रूप से शेष 26 देशों में भ्रमण कर सकता है। सीरिया के इन शरणार्थियों को भी इसी शेनजेन वीजा के तहत ही यूरोप में प्रवेश दिया जा रहा है। लेकिन इस वीजा में दिक्कत यह है कि यह वीजा लम्बे समय तक निवास करने अथवा किसी यूरोपीय देश में रहकर उद्योग या धन्ध करने की अनुमति नहीं देता है। इसलिए यह वीजा सिर्फ तात्कालिक हल ही है।

2. इन सीरियाई शरणार्थियों की बढ़ती संख्या देखकर यूरोपीय राष्ट्रों के द्वारा कोटा सिस्टम की वकालत की जा रही है जिसके लिए यूरोपीयन कमीशन के अध्यक्ष जीन क्लाड जकनर ने भी सिफारिश की।[9] जिसके तहत इस कोटा सिस्टम के द्वारा सिर्फ तटवर्ती देशों को ही नहीं अपितु सभी यूरोपीय देशों को कुछ संख्या में शरणार्थियों को अपने देश में शरण देनी होगी। जिससे कि सारा का सारा भार ग्रीस, इटली, हंगरी अथवा जर्मनी पर ही नहीं रहे।[10]

इस प्रकार से इन उपर्युक्त उपायों के माध्यम से काफी हद तक इस शरणार्थी समस्या का समाधान खोजा जा सकता है।

यूरोप शरणार्थी संकट : सरहदों के फेर में खेल बन गई जिंदगी

निष्कर्ष

सीरियाई शरणार्थियों की समस्या के समाधान के लिए उपर्युक्त कदम उचित प्रतीत होते है। लेकिन मुख्य रूप में शरणार्थियों को शरण देने का मुद्दा किसी भी राष्ट्र का घरेलू मुद्दा बन जाता है कि वह इस समस्या का समाधान कैसे करे। यदि उस राष्ट्र की परिस्थितियाँ एवं वातावरण माकूल होता है तो सम्बन्धित राष्ट्र के द्वारा शरण प्रदान कर दी जाती है। लेकिन यदि परिस्थितियाँ विपरीत है संकट ज्यादा ही गहरा रहा हो तो सम्बन्धित राष्ट्र के द्वारा शरणार्थियों को वापस अपनी सीमा से बाहर धकेल भी दिया जाता है[11] (इस तथ्य को अखबार की इस तस्वीर के माध्यम से बखूबी समझा जा सकता है) या फिर सीमा पर बाड़बन्दी/तारबन्दी भी कर दी जाती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *राजस्थान पत्रिका दिनांक 9 अगस्त, 2015 पृ.सं. 3/30 जैकेट "दायरों में दुनिया– : नागरिकता और स्टेटलैस होने का दंश झेल रहे करोड़ों शरणार्थी"*
2. *प्रो. आर.पी. जोशी (सम्पादित) : मानव अधिकार एवं कर्त्तव्य पृ. 158–159, प्रकाशन अभिनव प्रकाशन, अजमेर एवं https:/www/google.co.in/search*
3. *राजस्थान पत्रिका, अजमेर 15–9–2015, पृ.सं. 8 – प्रो. यू.एस. बाबा "मानवीय संकट की तरह लें"।*
4. *क्रमांक नं. 1 जैकेट से – "बार्डर पार भविष्य की आस"*
5. *क्रमांक नं. 3*
6. *आर.के. जैन : कोटा सिस्टम से निकल सकता है समाधान : राजस्थान पत्रिका, अजमेर 15–9–2015, पृ.सं. 8*
7. *उपर्युक्त*
8. *क्रमांक 3*
9. *क्रमांक 6*
10. *क्रमांक 6*
11. *राजस्थान पत्रिका, अजमेर दि. 16–3–2016, पृ. 13*